पाखी

सृजन की उड़ान

अगस्त 2025, मूल्य : 40

दूसरे को राख कर
खुद बची हुई है गीली लकड़ी

श्मशान सब कुछ राख नहीं कर पाता

जो राख है उसमें भी
ढूँढ़ रहे हैं कुछ जीवन के जेवर
कुछ अधजली लकड़ी के बचपन पर निगाहें गड़ाए हुए हैं

एक गूँगा बची हुई लकड़ी को
अपनी अस्पष्ट आवाज के सहारे उस कंधे पर लाद लेता है

श्मशान सबको राख नहीं कर पाता
बल्कि कुछ लोग इसे ठंडी रातों में
लिहाफ बना ओढ़ लेते हैं

—हरीशचन्द्र पाण्डे

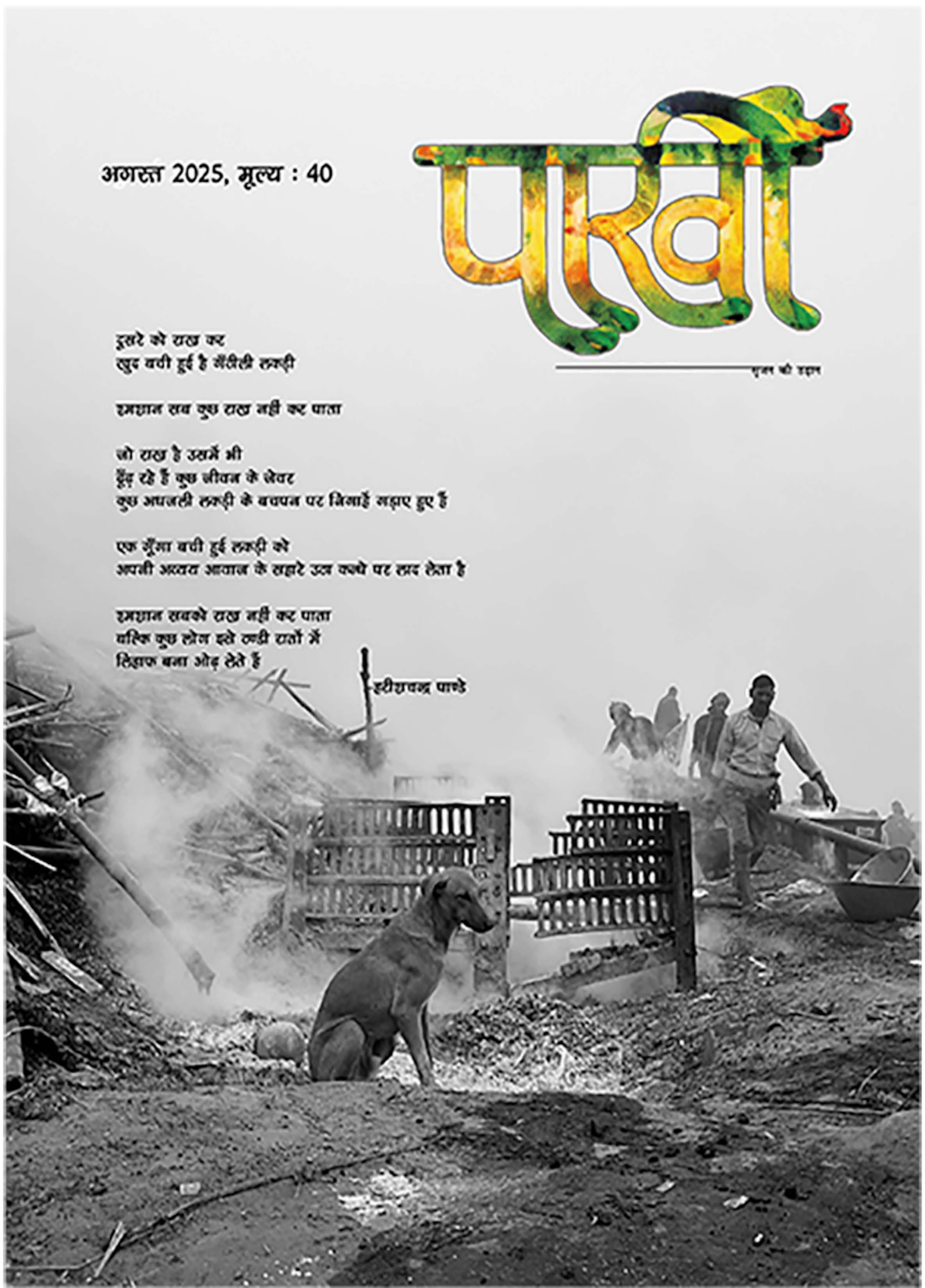

संपादक
अपूर्व

महाप्रबंधक
अमित कुमार

शब्द-संयोजन
उषा ठाकुर

आवरण पृष्ठ : जनार्दन कुमार सिंह
रेखाचित्र : संदीप राशिनकर, रोहित पथिक

वर्ष : 17, अंक 11, अगस्त, 2025

मूल्य :

प्रति	:	रु. 40.00
वार्षिक, रजिस्टर्ड डाक सहित	:	रु. 1000.00
आजीवन, रजिस्टर्ड डाक सहित	:	रु. 10000.00

भुगतान इंडिपेंडेंट मीडिया इनीशिएटिव सोसाइटी के नाम से किया जाए।
भुगतान ऑनलाइन या सीधे बैंक में भी जमा कर सकते हैं।
बैंक : UNION BANK
खाता संख्या : 520101255568785
IFSC : UBIN **0905011**
बैंक शाखा : जी-28, सेक्टर-18, नोएडा-201301
उत्तर प्रदेश

मणिकर्णिका घाट बनारस की तस्वीर ख्याति प्राप्त अधिवक्ता मनीषा भंडारी द्वारा ली गई है।

प्रकाशक

इंडिपेंडेंट मीडिया इनीशिएटिव सोसाइटी
बी-107, सेक्टर-63, नोएडा-201309
गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश
दूरभाष : 0120-4330755
editor@pakhi.in
pakhimagazine@gmail.com
www.facebook.comèpakhimagazine
Web portal : www.pakhi.in

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक और प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अंतर्गत विचारणीय। स्वामित्व इंडिपेंडेंट मीडिया इनिशिएटिव सोसाइटी के लिए प्रकाशक, मुद्रक नारायण सिंह राणा द्वारा चार दिशाएं प्रिंटर्स प्रा.लि. जी-39, नोएडा से मुद्रित एवं बी-107, सेक्टर 63, नोएडा से प्रकाशित।

अनुक्रमणिका

संपादकीय/अपूर्व

हाथ में पत्थर क्यों? 4

चिट्ठी आई है 6

कहानियां

रज्जो	:	उषा किरण	10
कारोबार	:	प्रदीप कुमारा राव	14
तल्खी	:	सेराज खान बातिश	18
एक सेल्फी पॉइंट के लिए...!	:	धनेश दत्त पांडेय	25
तस्वीरें बोलती हैं	:	वंदना मुकेश	32
जरा हौर उप्पर	:	खुर्शीद आलम	36
रिश्तों की ओस	:	दिवाकर पांडेय चित्रगुप्त	40

कविताएं/ग़ज़लें

कैलाश पचोरी की कविताएं 44

शैलेंद्र शैल की कविताएं 45

ज्ञान प्रकाश विवेक की ग़ज़लें 46

यश मालवीय की कविताएं 48

प्रवीण 'बनजारा' की कविताएं 50

ललन चतुर्वेदी की कविताएं 52

मूल्यांकन

मानवीय संवेदनाओं के सूक्ष्म चित्रकार	:	कुमारी उर्वशी	54
एक चुटकी भर जिंदगी	:	विजया सती	60
कहानियों में आम जन की जिंदगी बसी है	:	सुषमा मुनींद्र	63

संस्मरण

का कोंदों खा के धंधा करोगे? : राहुल राजेश 66

प्रतिक्रिया

पाकिस्तान का जन्म और उत्तर भारत से जाने वाले मुसलमान : सदफ फ़ातिमा 75

यात्रावृत्त

ब्रह्मलोक-दुबई-ब्रह्मलोक : पल्लवी प्रसाद 81

स्थाई स्तंभ

कल्पित कथन

राजकमल चौधरी का मुक्तिप्रसंग : कृष्ण कल्पित 85

सत्याग्रह

विज्ञान से मैदान तक खौलता राष्ट्रवाद : प्रियदर्शन 88

कथा-मीमांसा

कलात्मक सब्र के कथाकार (मनोज रूपड़ा की कहानियां) : पंकज शर्मा 90

द पर्पल पॉइंट

तुम 'ब्रालेस आंदोलन' जारी रखो : शोभा अक्षर 94

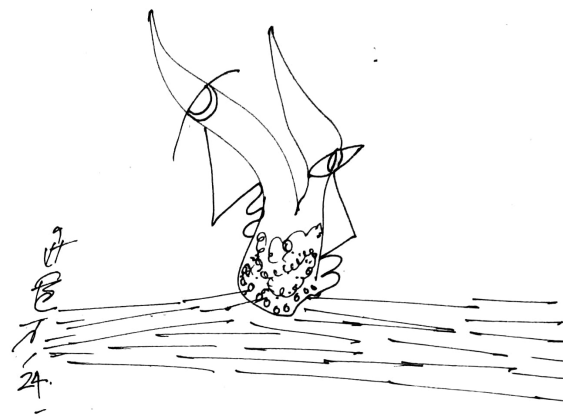

हाथ में पत्थर क्यों?

हाल ही में 'नई धारा' पत्रिका द्वारा संचालित रेजीडेंसी कार्यक्रम के अंतर्गत दो कवियों वरिष्ठ कवि कृष्ण कल्पित और युवा कवयित्री शिवांगी गोयल को आमंत्रित किया गया था। रेजीडेंसी के दौरान कथित रूप से उत्पन्न एक घटनाक्रम ने हिंदी साहित्यिक समुदाय में एक तीव्र बहस और असहजता का वातावरण उत्पन्न कर दिया है। शिवांगी गोयल द्वारा फेसबुक पर सार्वजनिक रूप से दर्ज की गई आपबीती के अनुसार, उनके साथ कृष्ण कल्पित ने अभद्र व्यवहार किया। इस बयान के बाद सोशल मीडिया पर प्रतिक्रियाओं की बाढ़ आ गई है। अनेक साहित्यकारों ने कृष्ण कल्पित की निंदा की है, कई ने उनके बहिष्कार की मांग की है, और कुछ ने उन्हें मंचों, पत्रिकाओं तथा संस्थानों से पूरी तरह अलग करने की घोषणा भी कर दी है।

'पाखी' में कृष्ण कल्पित का एक नियमित कॉलम प्रकाशित हो रहा है। अब मुझसे अपेक्षा की जा रही है कि मैं भी इस 'आंदोलन' में शामिल होकर उनका कॉलम बंद कर दूं। यह निर्णय मैं किसी दबाव या आवेग में आकर नहीं ले सकता। मेरे लिए यह केवल एक व्यक्ति का मामला नहीं है, बल्कि एक साहित्यिक पत्रिका के संपादक के रूप में अपनी नैतिक जिम्मेदारी, तथ्यपरक सोच और विवेकशील दृष्टिकोण को निभाने का प्रश्न है।

मैं शिवांगी गोयल के बयान को पूरी गंभीरता से पढ़ चुका हूं। एक महिला द्वारा उठाई गई आवाज को अनदेखा करना मेरे लिए संभव नहीं है, न ही मैं उसे कमतर आंकने की गलती करूंगा। लेकिन अब तक इस प्रसंग में कोई औपचारिक पुलिस शिकायत दर्ज नहीं कराई गई है, न ही कोई संस्थागत जांच या कानूनी प्रक्रिया आरंभ हुई है। ऐसे में सोशल मीडिया पर एकतरफा बहस के आधार पर किसी व्यक्ति की साहित्यिक छवि को ध्वस्त कर देना, मुझे असहज करता है।

इस पूरी बहस को और अधिक समझने के लिए जब मैंने वरिष्ठ पत्रकार और इस रेजीडेंसी के निर्णायक मंडल के सदस्य प्रियदर्शन का वक्तव्य पढ़ा, तो मुझे कई पहलुओं की और स्पष्टता मिली। उन्होंने बहुत साफ शब्दों में कहा है कि कृष्ण कल्पित बरसों से उनके लिए साहित्यिक परिसर में निषिद्ध रहे हैं। फेसबुक पर अपने लंबे अनुभव के दौरान वे किसी को ब्लॉक नहीं करते, लेकिन कृष्ण कल्पित को उन्होंने ब्लॉक किया, क्योंकि उनकी स्त्री विरोधी टिप्पणियां उन्हें लगभग आपराधिक प्रतीत होती थीं। वे यह भी स्पष्ट करते हैं कि निर्णायक मंडल में उन्होंने कृष्ण कल्पित को नहीं चुना था, बल्कि दो महिला लेखिकाओं की अनुशंसा की थी। उनका चयन बहुमत के निर्णय से हुआ। प्रियदर्शन ने यह भी कहा है कि कृष्ण कल्पित की विकृतियां उनकी कृतियों पर भारी हैं और उन्होंने सार्वजनिक रूप से उनकी आलोचना भी की थी। पर वे यह भी मानते हैं कि कृष्ण कल्पित को लंबे समय तक हिंदी समाज की स्वीकृति मिलती रही, वे मंचों पर आमंत्रित होते रहे, पुस्तकें प्रकाशित होती रहीं, पुरस्कार भी प्राप्त होते रहे।

प्रियदर्शन के वक्तव्य से यह भी स्पष्ट होता है कि उन्होंने निर्णय को सामूहिकता का सम्मान करते हुए स्वीकार किया, लेकिन उनका मूल मत असहमतिपूर्ण था। वे कृष्ण कल्पित के व्यवहार की निंदा करते हैं, पर साथ ही यह भी स्वीकार करते हैं कि यह मामला अब पीड़िता के हाथ में है। वह चाहे तो कानूनी प्रक्रिया का मार्ग चुन सकती हैं। उन्होंने ठीक ही लिखा है कि सोशल मीडिया की हड़बड़ी ने पीड़िता की निजता को भी तार-तार किया है, जो स्वयं में एक अपराध है। इस सारी स्थिति में मैं यह महसूस कर रहा हूं कि आज जब पूरा समाज 'त्वरित न्याय' और 'सोशल मीडिया अदालत' की गिरफ्त में है, तब एक संपादक का कर्तव्य और भी अधिक गंभीर हो जाता है। क्या हमें केवल आरोप के आधार पर निर्णय दे देना चाहिए? क्या हम बिना सुनवाई, बिना न्याय, और बिना पुष्टि के किसी लेखक को साहित्यिक जीवन से निष्कासित कर सकते हैं?

इतिहास गवाह है कि जब-जब भावनाओं ने तथ्यों को धकेला है, साहित्य और समाज दोनों को हानि हुई है। बाबा नागार्जुन पर उनकी मृत्यु के बाद यौन दुर्व्यवहार का आरोप लगाया गया। वह किसी औपचारिक जांच या शिकायत में तब्दील नहीं हुआ, न ही कभी सत्यापित हुआ। निःसंदेह आज भी नागार्जुन की रचनाएं हिंदी साहित्य की धरोहर मानी जाती हैं। लेकिन इस महान कवि को इन आरोपों के बाद संदेह दृष्टि से भी देखा जाने लगा है। पाब्लो नेरूदा ने अपनी आत्मकथा में स्वीकार किया कि उन्होंने श्रीलंका में एक महिला के साथ जबरदस्ती की। इसके बावजूद चिली में उनके योगदान को मिटा नहीं दिया गया, बल्कि इस प्रश्न पर बहस की गई कि क्या लेखकीय कृतित्व और निजी जीवन को एक ही तराजू में तोला जाना चाहिए।

पुलित्जर पुरस्कार विजेता लेखक जुनोट डियाज पर कई महिलाओं ने सोशल मीडिया पर आरोप लगाए। मीडिया ने उनकी छवि ध्वस्त कर दी। लेकिन एमआईटी विश्वविद्यालय ने स्वतंत्र जांच के बाद उन्हें दोषमुक्त पाया। इसके बाद भी साहित्यिक मंचों ने उनकी वापसी में समय लिया, लेकिन